मानव ह्रदय और ज्योतिषीय अवधारणा

*डॉ. धर्मसिंह गुर्जर

सारांश

ह्रदय मानव शरीर का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। यह वक्ष के बायीं ओर दोनों फेफड़ों के मध्य स्थित होता है। इसका कार्य मनुष्य के शरीर में रक्त संचार करना है। ह्रदय के कार्यो में व्यवधान आने से ह्रदय के घातक रो हाते है। ज्यातिष के अनुसार जन्मांग के चतुर्थ भाव से ह्रदय का विचार किया जाता है, मतान्तर से पंचम भाव को भी देखा जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रहों में सूर्स को ह्रदय का कारक माना गया है। जिन लोगों को भी ह्रदय सम्बन्धी रोग होते है, इनमें से अधिकांश व्यक्तियों का सूर्य पाप प्रभाव में अवश्य होता है।

कुट शब्द : ह्रदय, रोग, ग्रह, भाव, सूर्य

प्रस्तावना

ज्योतिर्विज्ञान का मूलभूत सिद्धान्त है कि आकाशीय पिण्डों का प्रभाव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में नित्य प्रवर्ममान है। इसी के परिणामस्वरूप मानव संसार भी ग्रहों तथा नक्षत्रों से अनवरत प्रभावित होता रहता है, इन प्रभावों का अध्ययन करते हेतु ज्योतिष रूपी नेत्र की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि अपनी दिव्य दृष्टि के माध्यम से भूत, भविष्य के साथ अतीन्द्रिय पदार्थों का भी प्रत्यक्ष बोध कराने वाले इस शास्त्र को वेद के चक्षु की संज्ञा प्राप्त है–

वेदचक्षुः किलेदं स्मृत ज्योपिष

ग्रह–नक्षत्रादि मनुष्य के जीवन में उसके प्रारब्ध (पूर्वार्जित) कर्मों के अनुसार ही अपना प्रभाव उत्पन्न करते है। किसी भी व्यक्ति द्वारा अन्य जन्मों में जो भी शुभाशुभ कर्म किये गये हो उनके फल तथा फलप्राप्ति के समय को ज्योतिष शास्त्र उसी प्रकार स्पष्ट व्यक्त करता है, जैसे अन्धकार में स्थित पदार्थो को दीपकर व्यक्त कर देता है–

यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाऽशुभ तस्य कर्मण पक्तिम।

व्यजयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इवं

अन्यत्र–

कर्मार्जित पूर्वभवे सदादि, यत् तस्य पक्ति समभिव्यनक्ति।।

इसके माध्यम से मनुष्य के जीवन में प्रगट होने वाली किसी भी समस्या का अनुमान उसके आगमन से पूर्व ही लगाया जा सकता है। मानवीय शरीर में होने वाले रोगों के विषय में भी यह कथन पूर्णतया सत्य है।

ज्योतिर्विज्ञान के माध्यम से शरीर में होने वाले किसी भी रोग की भविष्यवाणी समय रहते की जा सकती है। ह्रदय रोगों के सम्बन्ध में भी ज्योतिषशास्त्र में स्पष्ट विवेचन प्राप्त होता है किन्तु इस विषय में समझने से पूर्व ह्रदय की क्रियाविधि का समान्य ज्ञान होना आवश्यक हैं।

वस्तुतः हृदय मानव शरीर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जिसके माध्यम से शरीर के सभी अंगों तथा उपागों में रक्त का आदान–प्रदान होता है। शिराएँ अनुपयुक्त रक्त को लेकर हृदय में आती है और हृदय उस रक्त को शुद्ध कर सवेग के साथ धमनियों के द्वारा शरीर के प्रत्येक अंग में सचारित करता है, इस प्रकार शरीर के अग–प्रत्यंग को जीवन ऊर्जा प्राप्त होती है। जब हृदय की धड़कन रूक जाती है तो जीवनी शक्ति (प्राण) शरीर में नही रहती और प्राणी मृत्यू को प्राप्त करता है।

इसकी संरचना या कार्य प्रणाली में किसी प्रकार की कमी के कारण अथवा धमनियों या शिराओं में रक्त संचार व्यवस्था में अवरोध होने से हृदय रोग उत्पन्न होता है।

धूम्रपान, शराब का सेवन, तनाव पूर्ण जीवन शैली, मोटापा, अपुष्ट भोजन, यशानुगत कारण आदि इन रोगों के प्रमुख कारक है। हृदय रोंग कई प्रकार के होते है जैसे कि हृदय की धड़कन बढ़ना, हृदय में छेद होना, हृदय शूल, खून के थक्के जमने से हृदय घात होना, उच्च/निम्न रक्त चाप आदि।

फलित ज्यातिष में जन्मान के चतुर्थ भाव से हृदय का विचार किया जाता है तथा सूर्य की स्थिति को भी विशेष रूप से देखा जाता है क्योकि सूर्य को हृदय का नैसर्गिक कारक माना गया है। सूर्य की प्रतिनिधि राशि सिंह कालपुरूष की कुण्डजी में पंचम भाव में आती है। अतएव हृदय रोगों का विचार करने में इस भाव की स्थिति भी विचारणीय है। कुण्डली के षष्ठ स्थान से तो रोगों का विचार विशेष रू॰ से किया जाता है। इस कारण यह भाव भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

स्पष्ट है कि यदि चतुर्थ, पंचम भाव, इनके स्वामी ग्रह तथा सूर्य कुण्डली में अंशुभ स्थिति या अशुभ प्रभाव में हों अथवा षष्ठ भाव या षष्ठेश के साथ किसी प्रकार से सम्बन्धित हों तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।

इसके अतिरिक्त सहायक भावों के रूप में प्रथम, द्वितीय, तृतीय, सप्तम्, अष्टम व द्वादश भावों को भी देखा जाना चाहिए क्योंकि प्रथम भाव से शारीरिक स्वास्थ्य, तृतीय से शक्ति, अष्टम में आयु, मृत्यु व मृत्यु का कारण, द्वादश से सर्वप्रकार की हानि (व्यय) जिसमें कि स्वास्थ्य हानि भी सम्मिलित है का विचार किया जाता है, द्वितीय तथा सप्तम भाव को मारक भाव माना गया है। इस कारण इनका आकलन करना भी आवश्यक है।

हृदय रोंगों का विचार करने में इन सभी भावों पर शुभ–अशुभ ग्रहों के माध्यम से पड़ने वाले प्रभावों का सम्पूर्ण विश्लेषण करने के उपरान्त ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाना चाहिए।

इस प्रकार के रोंगों को उत्पन्न करने में जिन ग्रहों की सर्वाधिक भूमिका रहती है, उन्हें चार प्रकार से विभाजित कियाा जा सकता है–

1. सामान्य हृदयरोगकारक – सूर्य शानि
2. हृदयघातकारक – शानि, मंगल
3. उच्च रक्तदाबकारक – मंगल, गुरू
4. हृदयशूल कारक – राहु, शनि तथा मंगल

इन ग्रहों का अशुभ प्रभाव ही जब जन्माग में हृदय रोग करक भावों पर पड़ता है तो व्यक्ति को ऐसी व्याधियों का सामना करना पड़ता है।

किसी जातक को हृदय रोग होना या नही इसके लिए ज्यातिष ग्रन्थों में कई प्रकार के योग स्पष्ट किये गये है। इनमें से कुछ प्रमुख योगों का विवरण अग्राकित है–

1. चतुर्थ स्थान में षष्ठेश होकर शनि या गुरू स्थित हो और साथ में पाप ग्रह भी हो तो मनुष्य के शरीर पर काले चकत्ते (पित्त) होते है तथा उसके हृदय की धड़कन बढ़ी रहती है।
2. यादि चतुर्थ में पाप ग्रह से युक्त षष्ठेश सूर्य हो तो मनुष्य हृदय रोगी होता है।
3. यदि चतुर्थ में गुरू, शनि एवं मंगल हो तो भी मनुष्य हृदय रोगी होता है।

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ "पर्वतीय" जी ने जातक भूषणम में इन तीनों योगों को स्वीकार किया है–

स्यात्कृष्णपित्ती हृदिकम्पयुक खलै

सम्पीड़ितः सन्सलिलेऽरिपे शनौ।

साधेऽथवेज्येऽथ तथाविधे रवौ

हृदुक तथेज्येनजभूभुवों भुवि।।

4. यदि निर्बल लग्नेश पापग्रहों से दृष्ट हो और चतुर्थ भाव राहु से आक्रान्त हो तो हृच्छूल होता है–

हृच्छूलरोगमुपयाति सुखे फणीशें पापेक्षिते गतबले यदि लग्ननाथे।

5. चतुर्थेश व्यय भाव में व्यय भावेश युक्त हो, नीच, शत्रु गृही, अस्तगत हो तो हृदय रोग होता है।
6. पंचम भाव में पापग्रह हो, पंचमेश पापयुक्त हो या ये पापमध्य में हो तो हृदय रोग होता है।

हृदये पाप संयुक्ते तदीशे पापसयुते।

पापग्रहाणा मध्यस्थे हृद्गतं रोगमादिशेत्।।

7. पंचमेश अष्टम में हो या अष्टमेश से युक्त हो या पंचमेश नीचास्तगत शत्रुक्षेत्री हो तो मनुष्य हृदय रोगी होता है–

तन्नाथे नाश भावस्थे नाशस्थानेश सयुते।

नीचारिमूढ़ भावे वा हृद्गत रोगमादिशेत्।।

8. पचमेश के नवाशेश की अधिष्ठित राशि का स्वामी यदि क्रूरषष्ठयंश में हो और क्रूरदृष्ट हो तो हृदय में रोग या रूकावट होती है–

तदीशस्थांशराशीशे क्रूरषष्ठयंशसयुते।

क्रूरग्रहेण सदृष्टे हृदगत शल्य मादिशेत।।

9. पंचम भाव में सुर्य स्थित हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
10. चन्द्रमा यदि शत्रुग्रही हो तो जातक को हृदय रोग हो सकता है।

11. सुर्य यदि कुम्भ राशि में हो तो हृदय रोग उत्पन्न होता है।
12. शुक्र यदि मकर राशिगत हो तो व्यक्ति हृदय रोगी होता है।
13. तृतीयेश यदि केतु से युक्त हो तो जातक हृदय रोगी होता है।
14. सूर्य यदि मकर राशि में हो तो मनुष्य को हृदय रोग देता है।
15. सिंह राशि नवांश में स्थित चन्द्रमा पर शानि की दृष्टि हो तो हृदय रोग होता है।
16. यदि जन्माग में लग्नेश व षष्ठेश दोनों ही बुध से सम्बन्धित हो तो हृदय रोग होता है।
17. वृश्चिक राशि में सूर्य हो तो जातक हृदय रोगी होता है।
18. मंगल–शनि का परस्पर पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध हो और मंगल लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे, तो रक्त चाप रोग का भय रहता है।
19. षष्ठेश सूर्य के नवाश में हो तो हृदय रोग होगा।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में हृदय रोगियों की संख्य में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। ऐसे में इन रोगों को नियंत्रित करने हेतु ज्योतिष्शास्त्र की सहायता ली जाये तो इस कार्य में अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। ज्योतिषीय आधार पर यह विचार किया जाना चाहिए कि यदि हृदय रोगों की ओर इगित करने वाले ग्रह योग किसी जातक के जन्माग में हो तो उसे चिकित्सकीय परामर्श द्वारा इन रोगों के परीक्षण का सुक्षाव देना चाहिए, ताकि आधुनिक चिकित्सा का लाभ समय रहते व्यक्ति को प्राप्त हो सके।

***सह आचार्य**
व्याकरण विभाग
राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,
बौंली (राज.)

संदर्भ सूची

1. सद्धिान्त शिरोमणि/मध्यमाधिकार (कालमानाध्यायः)/ श्लोक 11/ प्रकाशक–न्यू रायल बुक कम्पनी लखनरू/ प्रकाशन वर्ष–2007ई0
2. लघु जातकम्/राशिबलाध्यायः/श्लोक 3/प्रकाशक–चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी/प्रकाशन वर्ष–2009ई0
3. बृहज्जातकम्/राशिप्रभेदाध्यायः/श्लोक 3 परार्ध भाग/प्रकाशक–रजन पब्लिकेशन नई–दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2008ई0
4. कल्याण (ज्योतिषतत्वाक)/पृष्ठ 350/प्रकाशक–गीताप्रेस, गोरखपुर/प्रकाशन वर्ष–2014ई0
5. फलदीपिका/राशिभेदाध्यायः/श्लोक 4/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2010ई0

6. फलदीपिका/रोगनिर्णयाध्यायः/श्लोक 2/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2006ई0

7. फलदीपिका/राशिभेदाध्यायः/श्लोक 6 पूर्वार्ध भाग/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2006ई0

8. लघुजातकम/राशिबलाध्यायः/श्लोक 4 5/पृष्ठ 3/प्रकाशक–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी/प्रकाशन वर्ष–2013ई0

9. सर्वार्थ चिन्तामणि (प्रथम खण्ड)/पुत्रादिभावाध्यायः/श्लोक 1/प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2010ई0

10. उत्तरकालामृत/कारकत्व खण्ड/श्लोक 10.11/पृष्ठ–102/प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन्स नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2003ई0